अध्याय चार

अमरकांत की कहानियों का आर्थिक संदर्भ

अध्याय चार
अमरकांत की कहानियों का आर्थिक संदर्भ

मौजूदा समाज अर्थकेन्द्रित है। पूरी दुनिया अर्थ की 'धुरी' पर चलती है। मध्यकाल से चली आ रही सामंती और पूँजीवादी शोषण चक्र में फंसी जनता के लिए तथा बाद में अंग्रेज़ों की शोषणकारी नीति के दुष्प्रभाव से त्रस्त भारतीय जनता के लिए स्वतंत्रता के बाद 'अर्थ' सबसे बडा आकर्षण का केन्द्र बना था। वर्तमान युग में अर्थ ने ईश्वर का स्थान ले लिया, मतलब दुनिया की सारी गतिविधियों का नियंत्रण अब अर्थ कर रहा है।

स्वाधीनता के बाद पंचवर्षीय योजनाओं का सूत्रपात, ज़मीन्दारी उन्मूलन आदि से आर्थिक लाभ तो ज़रूर हुआ लेकिन सबको समान रूप से प्राप्त नहीं हो सका। इन पद्धतियों की असफलता, बढ़ती आबादी, चतुर्दिग व्याप्त भ्रष्टाचार आदि के फलस्वरूप मानव में आर्थिक आकांक्षाएँ बढती गयी लेकिन उसके अनुरूप उसका आर्थिक विकास नहीं हो सका। समाज में अर्थप्राप्ति की अदम्य लालसा बढ़ती गयी और चारों ओर भ्रष्टाचार पनपता रहा। इसके फलस्वरूप समाज में आम आदमी की ज़िंदगी संघर्षपूर्ण बनती गयी और ज़िंदगी के दोनों छोरों को मिलाने के लिए भाग दौड मची। अमरकांत की कहानियों के माध्यम से अर्थप्राप्ति की भागदौड में फंस गयी मानव जीवन की संवेदनाओं को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति अवश्य मिली है।

4.1 अर्थ से तात्पर्य

अर्थ का यहाँ तात्पर्य धन से है। अर्थ शास्त्र के जन्मदाता एडम स्मिथ के अनुसार "अर्थशास्त्र वह अध्ययन है जो राष्ट्रों के धन के स्वभाव एवं इसके कारणों की जाँच करता है।"[1] मतलब अर्थ का सीधा संबन्ध धन से हैं जो आजकल मनुष्य से भी मूल्यवान वस्तु बन गया है। संपत्ति, पैसा आदि इसके पर्यायवाची शब्द है। यहाँ इस अध्याय में 'अर्थ' का इस अर्थ में विवेचन विश्लेषण हुआ है।

स्वतंत्रता के पहले अंग्रेज़ी राज में जो आर्थिक संकट की स्थिति भारत में थी, अंग्रेज़ों के चले जाने के बाद उसमें बडा अंतर तो नहीं आया। भारत में हुए युद्ध और अकाल कुछ लोगों के लिए मुनाफा कमाने का साधन बनकर आया। अनेक भारतीय सेठ इस काल में साहूकार से पूँजीपति बन गए और कालान्तर में भारतीय राजनीति पर भी अपना वर्चस्व स्थापित करने में कामयाब हुए। इस स्थिति ने भ्रष्ट राजनीतिक के भी एक ऐसे वर्ग को तैयार किया जो आज़ादी के बाद व्यवस्था पर हावी हो गया और देश के विकास के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। युद्धोत्तर समस्याओं के साथ-साथ बाद में बेकारी, महंगाई, भूख की विपन्न स्थिति उत्पन्न हुई। अमरकांत इन सब का भुक्त-भोगी है। अतः उनकी कहानियों पर इसका स्पष्ट प्रभाव है।

---

1. Economics is concerned with enquiry into the causes of the wealth of nations - Adam Smith (An enquiry into the nature and causes of the wealth)

4.2 अमरकांत की कहानियों में बेरोज़गारी

स्वतंत्रता के पश्चात् वास्तव में स्वतंत्रता पूर्व परिस्थितियों में बदलाव जरूर आना चाहिए था। जनता की भी ऐसी उम्मीद थी। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति से जिस तरह का प्रभाव समाज पर पडना चाहिए था ठीक उसका उल्टा ही हुआ। आज़ादी के लिए संघर्ष तो ज़रूर हुआ था लेकिन उसको बनाये रखने के लिए, मज़बूत बनाने के लिए, प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए तथा ज़िंदगी को बेहतर बनाने के लिए कोई उचित कदम नहीं उठाया गया। भारतीय जनता के लिए कई तरह की समस्याओं का सामना करना पडा। उसमें एक गंभीर समस्या बेरोज़गारी की थी। बढ़ती आबादी ने बेरोज़गारी की समस्या को अधिक गंभीर और जटिल बनाया। इसने जनजीवन में कई तकलीफें उत्पन्न कर दी। अमर्त्य सेन के शब्दों में - "यह देखा गया है कि रोज़गार की हानि के कारण व्यक्ति को आय हानि के अतिरिक्त भी अनेक प्रकार की अन्य वंचनाओं को सहन करना पड़ जाता है। इनमें से कुछ प्रमुख है : मानसिक तनाव, कार्य करने की सम्प्रेरणाओं की विलुप्ति, कार्यक्षमता और आत्मविश्वास का कुंठित हो जाना, बीमारियों - व्याधियों का शिकार होना, पारिवारिक एवं सामाजिक संबन्धों में व्यवधान आना, सामाजिक बहिष्कृति में वृद्धि, जातीय तनाव एवं स्त्री पुरुष के बीच विषमांगता में वृद्धि आदि।"[1] इस भीषण समस्या को अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

---

1. अमर्त्य सेन, आर्थिक विकास और स्वातंत्र्य, पृ. 109

स्वतंत्ता के बाद भारत के अधिकांश युवक बिना किसी काम और आय के आवारा होकर घूमने लगे। अमरकांत की कहानियों में इस प्रकार की युवा पीढ़ी की तकलीफों को आवाज़ मिली है। 'डिप्टी कलक्टरी', 'बेरोज़गारों की बात', 'एक निर्णायक पत्र', 'दोपहर का भोजन', 'दर्पण', 'पहलवानी' आदि कहानियाँ इसी समस्या को उजागर करनेवाली हैं।

'दोपहर का भोजन' पाँच प्राणियों से बने परिवार की कहानी है, जहाँ कमानेवाला कोई नहीं। सिद्धेश्वरी का पति पहले मकान किराया नियंत्रण विभाग में क्लर्क था, जहाँ से डेढ़ महीने पूर्व उसकी छँटनी हो गयी थी। अब सबेरे-शाम नौकरी की तलाश में घूमना और निराश होकर लौटना ही उसकी दिनचर्या बन गयी है। बडा बेटा मोहन इंटर पास है और काम सीखने की गरज से एक दैनिक समाचार पत्र में प्रूफरीडरी करता है। इससे उसको न किसी तरह का वेतन मिलता है, न भविष्य के लिए आश्वासन। बाकी तो बच्चे हैं जिससे अब कुछ कमाने की गुंजाईश ही नहीं। इस प्रकार बेरोज़गारी से उत्पन्न आर्थिक पराधीनता को सहन करनेवाले परिवार को प्रस्तुत कहानी के माध्यम से पाठकों के सम्मुख अमरकांत ने पेश किया है।

स्वतंत्रता के बाद देश की व्यवस्था और नेतृत्व में व्याप्त भ्रष्टाचार ने देश के नवयुवकों के मन में निराशा की भावना उत्पन्न कर दी। हालत ऐसी थी कि पढी-लिखी योग्य व्यक्तियों को नौकरी पाने के लिए किसी नेता का हाथ पैर पकडना पडता था। 'एक निर्णायक पत्र', 'पहलवानी', 'दर्पण' आदि कहानियों के माध्यम से अमरकांत ने इसी समस्या को उजागर करने की कोशिश की है।

'पहलवानी' एक ऐसे नौजवान की कहानी है जो बिना नौकरी के ज़िंदगी को आगे बढाने के लिए तरसता रहता है। कथावाचक के घर में जब वह आता है तो वह अपना परिचय इस प्रकार देता है कि वह बडा साहित्यकार है और उसने अनेक उपन्यासों का सृजन किया है। कथावाचक के भाई को ढूँढकर वह नौजवान आया था। जब कथावाचक ने भैया की अनुपस्थिति की बात कही तो नौजवान इस प्रकार का व्यवहार करता है कि वह बहुत जल्दी में है और उसे बहुत सारे काम है। वह उसका चेहरा भी ऐसा था कि वह बहुत ही वेसब्री से भैया का इंतज़ार कर रहा है। कथावाचक ने नौजवान से पूछा कि आप कहीं काम भी करते हैं तो वह कहता है कि मैं साहित्यकार ही रहना चाहता हूँ, मैं अपनी कृति छपवाना भी नहीं चाहता और कोई सरकारी नौकरी करना भी नहीं चाहता। आगे वह कहता है - "हाँ नौकरी तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है। मैं चाहूँ तो बिना सिफारिश के ही रेडियो, सूचना विभाग, दूरदर्शन आदि में नौकरी ले लूँ। दूरदर्शन के एक पदाधिकारी ने मुझे विशेष रूप से बुलवाया था। मैं टाइम देकर वहाँ नहीं पहूँचा। मुझे क्या गरज पडी है।"[1] इस प्रकार वह नौजवान कथावाचक के आगे यह स्थापित करने की कोशिश करता है कि वह नौकरी इसलिए नहीं करता कि वह करना ही नहीं चाहता। लेकिन वास्तविकता तो उनके ही शब्दों में प्रतिफलित है। वह नौजवान भारत के असंख्य युवकों का प्रतिनिधि है जो योग्यता और क्षमता होने पर भी व्यवस्थागत भ्रष्टताओं के कारण नौकरी से वंचित है। कहानी के अंत में उस नौजवान का कथन इस बात को सिद्ध करने में सफल है - "आप मुझे पचास रुपये दे सकते हैं? हज़ार रुपये

---

1. अमरकांत, पहलवानी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 47

का एक चेक कहीं से मिल गया था। बैंक में जमा कर दिया था - कल पैसा मिल जाएगा। कल शाम को मैं जरूर दे जाऊँगा।"[1] स्पष्ट है कि वह नौजवान बेरोज़गारी की विषमता से त्रस्त है।

'दर्पण' कहानी में भी ऐसे नौजवानों का जिक्र किया गया है जो बिना नौकरी के ज़िंदगी के दोनों छोरों को मिलाने में असमर्थ है। कुलदीपक 'भारती' से मिलने के लिए कुछ लोग आए हैं। भारती वहाँ का बडा नेता है। लोगों का विश्वास है कि उससे मिलने से समस्याओं का समाधान मिल जाएगा। वहाँ उसे मिलने के लिए आए अधिकांश लोगों की परेशानी नौकरी को लेकर है। "उनमें सभी ऐसे थे जो अपने को असहाय समझकर यहाँ दौडे आये थे, महरी के लडके के अलावा वहाँ दो और नौजवान थे, जो बेकार तो थे ही, ओवर एज भी हो चुके थे। उनमें से एक को व्यवसाय चलाने के लिए ऋण नहीं मिल रहा था और दूसरे को कोई अन्य नौकरी न मिलने पर पत्रकारिता में घुसने के लिए सिफारिश करानी थी।"[2]

भारती से मिलने के लिए एक बुढिया और एक नौजवान आए हुए थे। नौजवान जो है बि.ए. करने के बाद बेकार घूम रहा था। बुढिया ने उसके सामने अपने लडके की सिफारिश का आवेदन रखा तभी भारतीय का परिचित व्यक्ति प्रद्युम्न वहाँ आता है और एक नौजवान को नौकरी लगवाने की सिफारिश करता है और कहता है लड़का पढ़ने में माहिर तो थे नहीं, किसी तरह बि.ए किया है तो

---

1. अमरकांत, पहलवानी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ (2), पृ. 49
2. अमरकांत, दर्पण, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 52

भारतीजी कहता है कोई बात नहीं, नौकरी लगवा दूँगा। उसके जाने के बाद उसने बुढ़िया और लड़के की ओर दृष्टिपात करते हुए रुखाई से कहा - "अरे, तुम लोग बैठे हो? मैं तुमसे कई बार कह चुका हूँ कि केवल बि.ए. करने से काम नहीं चलेगा, आगे पढ़ो.... किसी चीज़ की ट्रेनिंग ले लो... वकालत ही पढ़ लो.... वकील लोग बडा पैसा पीटते हैं।"[1] वास्तव में जिस लड़के की सिफारिश लेकर प्रद्युम्न वहाँ आया था, उससे भी काबिल था दूसरा लड़का। लेकिन अर्थ केन्द्रित वर्तमान समाज में योग्यता और क्षमता की कोई अहमियत ही नहीं है।

'डिप्टी कलक्टरी' का नारायण जो अपने परिवार के सहयोग और अपने परिश्रम के फलस्वरूप 'डिप्टी कलक्टरी' की इंटरव्यू तक पहुँचता है लेकिन अंत में उसे नौकरी मिलता नहीं। 'इंटरव्यू' कहानी में राशनिंग विभाग में होनेवाले इंटरव्यू के लिए वहाँ जमी हुई भीड़ भी बेरोज़गारी की विभीषिका का खुलासा करती है।

देश की स्थिति ऐसी है कि यहाँ पढ़ाई के बाद उचित काम मिलना मुश्किल है। ऐसी स्थितियों लोगों का विदेश जाना स्वाभाविक है। लेकिन इन विकसित देशों में जब आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है तब पहले तो उन लोगों की नौकरी चली जाती है जो बाहर से आए हैं। अमरकांत ने अपनी कहानियों में इस मुद्दे को उठाया है। 'शाम के घिरते अंधेरे में भटकता नौजवान' नामक कहानी में आर्थिक मंदी के कारण बेरोज़गार बने लोगों का जिक्र है। इसमें कथावाचाक जब अपने पास आए

---

1. अमरकांत, दर्पण, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 57

नौजवान से इंजनीयर बनने के बाद दूसरे देश में नौकरी की संभावनाओं के बारे में कहता है तो नौजवान कहता है - "सर, अब वैसी बात नहीं है, अभी एक विकसित देश से इसी विषय के कई इंजीनियर मंदी की वजह से नौकरी से निकाल दिये गये हैं। वे स्वदेश लौट आए हैं और काम के लिए काफी परेसान हैं...।"[1] इस प्रकार विदेश से लौटकर स्वदेश में उसे बेकार होकर घूमना पड़ताहै। फिर बेकारी उनकी नियति बन जाती है। दूसरों के नज़र में तो वे लोग तो बडे होंगे लेकिन वास्तव में इन्हें अपनी ज़िंदगी भर इन्हें बेकार होकर घूमना पडेगा।

'एक निर्णायक पत्र' का नौजवान भी व्यवस्था द्वारा दिए गए धोखे के कारण नौकरी से वंचित था। लेकिन वह हार मानने के लिए और निराश होने के लिए तैयार नहीं था। वह इस प्रकार का निर्णय लेता है कि नौकरी न करूँगा और स्वावलंबन का मार्ग अपनाऊँगा। बिना नौकरी के निराश होकर असफल ज़िंदगी बितानेवाले युवकों के लिए 'एक निर्णायक पत्र' का कुमार विनय एक मिसाल है।

4.3 आर्थिक अभाव

प्रारंभ से ही भारत की अर्थ व्यवस्था दोगली रही है। एक ओर पूँजीवादी व्यवस्था संपूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था का विधाता बन बैठी थी दूसरी ओर भारत की आम जनता आर्थिक विपन्नता और शोषण से तडप रही थी। आबादी का भयानक विस्फोट ने बेरोज़गारी की समस्या को अधिक विकराल बना दिया था। तत्पश्चात भूख और गरीबी ने देश के आवाँ की ज़िंदगी के झकझोर कर दिया।

---

1. अमरकांत, शाम के घिरते अंधेरे में भटकता नौजवान, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 319

अमरकांत की कहानी 'दोपहर का भोजन' इस आर्थिक अभाव में दम घुटनेवाले परिवार की तस्वीर खींचती है। पाँच व्यक्तियों से बने उस परिवार में कमानेवाला कोई नहीं है। बनाई गयी सात रोटियों से दिन चलाना था। रामचंद्र, मुंशीजी और मोहन के खाने के बाद केवल एक ही रोटी बची थी। आर्थिक विषमता और भूख से तडपनेवाले परिवार का मार्मिक चित्रण अमरकांत ने यों किया है - "मुंशी जी के निबटने के पश्चात सिद्देस्वरी उनकी जूठी थाली लेकर चौके भी ज़मीन पर बैठ गयी। बटलोई की दाल को कटोरे में उँडेल दिया, पर वह पूरा भरा नहीं। छिपुली में थोडी सी चने की तरकारी बची थी, उसे पास खींच किया। रोटियों की थाली को भी उसने पास खींच लिया। उसमें केवल एक रोटी बची थी। मोटी, भद्दी और जली उस रोटी को वह झूठी थाली में रखने जा रही थी कि अचानक उसका ध्यान ओसारे में सोये प्रमोद की ओर आकर्षित हो गया। उसने लडके को कुछ देर तक एकटक देखा, फिर रोटी को दो बराबर टुकडों में विभाजित कर दिया। एक टुकडे को तो अलग रख दिया और दूसरे को अपनी जूठी थाली में रख दिया। तदुपरान्त एक लौटा पानी लेकर खाने बैठ गयी। उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टप-टप आँसू चूने लगे।"[1] यहाँ सख्त गरीबी में अपने परिवार के प्रति चिंतित एवं व्याकुल माँ मन की व्यथा को अमरकांत ने आवाज़ दी है। ओसारे में सोये पडे बच्चे की तस्वीर जो अमरकांत ने पेश की है, उस घर की आर्थिक अभाव की भीषणता को व्यक्त करने केलिए काफी है - "लडका नंग-धडंग पडा था। उसके गले तथा छाती की हड्डियाँ

---

1. अमरकांत, दोपहर का भोजन, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 68

साफ दिखाई देती थीं। उसके हाथ-पैर बासी ककडियों की तरह सूखे तथा बेजान पडे थे और उसका पेट हँडिया की तरह फूला हुआ था। उसका मुख खुला हुआ था और उसपर अनगिनत मक्खियाँ उड़ रही थीं।"[1] इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर भारत की साधारण जनता जिसने आरामतलब जिंदगी का सपना देखा था, वास्तव में जीवन और मृत्यु के बीच साँस लेने के लिए झटपटा रही थी।

'रिश्ता' कहानी में एक ऐसे लडके का चित्रण हुआ है जो पढने में माहिर होने पर भी घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण पढ़ाई छोडने के लिए विवश होता है और बाद में अपने अध्यापक की सहायता से अच्छे ओहदे पर पहूँचता है। पढते वक्त उसको घर की परेशानियाँ तंग करती थी। एक बार वहीद मौलवी साहब ने लडकों से नयी कॉपी पर खुशकत लिखकर लाने के लिए कहा था। पर नईम को नयी कॉपी खरीदने के लिए घर से पैसे न मिले। मौलवी साहब ने एक लडके को बाहर भेजकर उससे खजूर की छडी काट कर लाने के लिए कहा। छडी आने पर उन्होंने नईम की जमकर पिटाई की। इससे परेशान होकर उसने पढ़ाई छोडने का निर्णय तक किया था। जब इस कॉपी की बात घर में कही तो अब्बा से भी उसे डाँट-फटकार मिली - "क्या तेरी यह कॉपी-किताब रोटी देगी? रोटी तो करघे से ही मिलेगी। कल से स्कूल छोड और करघे पर बैठ....।"[2] वास्तव में बेटे को पढाने के लिए उस निर्धन बाप के पास पैसा नहीं है। नईम के परिवार में उसका अब्बा एक जून की रोटी कमाने के लिए जद्दोजखत करनेवाला आदमी है। बच्चे की पढ़ाई का भी खर्च उठाना उसके लिए बहुत ही मुश्किल का काम है।

---

1. अमरकांत, दोपहर का भोजन, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 62
2. अमरकांत, रिश्ता, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 73

'पहलवानी' कहानी का नौजवान जो अंत में आकर कथावाचक से पचास रुपये माँगता है, बेरोज़गारी से उत्पन्न आर्थिक तंगी का शिकार है। 'डिप्टी कलक्टरी' का शकलदीप बाबू जो अपने बेटे को डिप्टी कलक्टर बनाने के लिए कर्ज के ऊपर कर्ज आता है।

आज के अर्थाधीष्ठित समाज में एक औसत मध्यवर्गीय परिवार के आदमी छोटे-मोटे काम करके अपनी आजीविका चलाता है लेकिन उससे वह तृप्त नहीं है। इसलिए वह जल्दी धन कमाने की कोशिश करता है। 'सप्ताहान्त' कहानी का रामसंजीवन कई उद्योग करता है पर उसमें वह सफल नहीं हुआ। ज़िंदगी की इस होड में वह लॉटरी टिकट पर आश्रय लेता है। कभी भी वह लॉटरी टिकट लेना नहीं भूलता। एक बार पानवाला मोती दौडकर उसके पास आता है और कहता है कि पहला इनाम तो उसको ही मिला है।

इस अप्रत्याशित भाग्य से रामसंजीवन और उसका परिवार खुश हुए। पैसे मिलने के पूर्व ही उसके खर्चे की योजना बनायी जाने लगी। "रामसंजीवन बहुत ही गंभीरता के साथ अपनी योजना बता रहा था। पहले तो बनेगा मकान। फिर लडकियों की शादी होगी। एक-एक लडकी पर बीस-बीस हज़ार। इसके बाद शेष रुपये बैंक में जमा कर दिए जाएँगे और उनके सूद से आराम से ज़िंदगी कटेगी.... नहीं, वह तो यही नौकरी करता रहेगा...."[1] लेकिन उनकी यह खुशी कुछ ही घंटों तक सीमित थी। सुबह जब अखबार आया तो प्रथम पाँच विजेताओं में रामसंजीवन का नाम नहीं था। यथार्थ की भूमि पर आकर उनके सपने चूर-चूर हो गए।

---

1. अमरकांत, सप्ताहान्त, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 477

इस प्रकार अमरकांत ने अपनी कहानियों में तथाकथित समाज में आर्थिक अभाव और अन्य आर्थिक विषमताओं से त्रस्त आदमी का चित्रण बखूबी से किया है।

4.4 पारिवारिक विघटन

आज का समाज अर्थकेन्द्रित है। इस अर्थकेन्द्रित समाज में आदमी धन कमाने की अंधाधुंध दौड़ में है। आज दुनिया ऐसी है कि अमीर अपनी तिजोरियाँ भरता रहता है, गरीबों के पास भरने के लिए तिजोरी तो है ही नहीं। गरीब गरीब होता ही जा रहा है। मतलब धन हमेशा एक ही जगह पर इकट्ठा हो रहा है। उच्चवर्ग सुखलोलुप होकर आरामतलब जिंदगी बिता रहा है और मध्यवर्ग दो जून की रोटी के लिए दिन-रात तरस रहा है। अर्थ की कमी हमेशा परिवार में अशांति का कारण बन जाती है। यह परिवार में कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न करती है। घर में आवश्यक साधनों की कमी कभी-कभी पति-पत्नी के बीच तनाव उत्पन्न करता है। इससे उत्पन्न छोटे-छोटे झगडे बाद में बडा रूप धारण कर लेता है और पारिवारिक विघटन का कारण बन जाता है।

'केले पैसे और मूँगफली' नामक कहानी में आनंदमोहन 'राष्ट्रीय अग्रदूत' नामक स्थानीय दैनिक समाचार पत्र में उपसम्पादक के पद पर काम करता है। महीने में नब्बे रुपये वेतन मिलता था। महीने के अंत होने से पैसा खत्म होता है। उस दिन घर में एक पैसा नहीं था। और किसी तरह उधार लेकर नमक और तरकारी खरीदने के बाद खाना बना था। लेकिन असली समस्या तो तब पैदा हुई जब केलेवाला 'केला-मलाई' कह-कहकर गली भर में फेरी लगाने लगा और

आनंदमोहन का लडका राजीव केला-मलाई खरीदने के लिए हठ करने लगा। वास्तव में घर में एक कौडी भी नहीं थी। उसकी पत्नी सुमंगला ने लडके को समझाने की कोशिश की लेकिन लडका माना नहीं। वह लगातार रोता रहा। केलेवाला नया था इसलिए उधार मिलने की संभावना भी नहीं थी। सुमंगला ने बच्चे को समझाने-बुझाने की लाख कोशिश की लेकिन बच्चा थोडी देर बाद ज़मीन पर लोट कर हाथ पैर पटकने लगा। खामख्वाह आनंदमोहन को गुस्सा आया और उसने लपक कूदकर लडके के गाल पर दो तमाचे जड दिये। इसको लेकर सुमंगला और आनंदमोहन के बीच झगडा शुरू होता है। सुमंगला कहती है - "अरे, लडका है न जी, मोहल्ले भर के लडके को खाते-पीते देखता है तो जिद्द कर बैठता है, नहीं तो मेरा बच्चा लाखों में एक है।"[1] आनंदमोहन के पास इसके लिए जवाब नहीं था। आखिर बच्चा तो है। बच्चों की भी कुछ आशा-आकांक्षाएँ होती है। मगर कभी-कभी मध्यवर्गीय परिवार के माँ-बाप बच्चों की आशा-आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए असमर्थ निकलता है क्योंकि सबका आधार अर्थ ही है।

आनंदमोहन सुमंगला से पूछता है - "क्यों जी सचमुच घर में एक पैसा भी नहीं है?"[2] इस पर सुमंगला को गुस्सा आता है वह पूछती है - "पैसा रहता तो क्या मैं देती नहीं? कभी छिपाकर कुछ रखा भी है कि आज ही रखूँगी।"[3] इस प्रकार उन दोनों के बीच पैसे को लेकर अफवाह शुरू होता है। अधिकांश मध्यवर्गीय ज़िंदगी

---

1. अमरकांत, केले पैसे और मूँगफली, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 53
2. वही
3. वही

ऐसे ही है। आज पैसा सबका आधार बन गया है। आज स्थिति ऐसी है कि जिस घर में पैसा नहीं वहाँ अशान्ति तो ज़रूर बनी रहेगी।

पैसा आदमी के चरित्र को बिगाडने के लिए भी कारण बन जाता है। 'घर' कहानी का पिता प्राइवट कंपनी में क्लर्क था। थोडी-सी तनख्वाह पाता था। लेकिन उसका सही ढंग से वह इस्तेमाल नहीं करता था। परिवार और परिवारवालों की देखभाल करने के बजाय वह अपनी तनक्वाह को व्यर्थ काम में डाल देता था। वह उस पैसे से फ्लश खेलता था। "छुट्टी के दिनों में वह दिन-रात चौबीस घंटे गायब रहते और दीपावली के आस-पास तो उनका दर्शन ही दुर्लभ हो जाता। ....हारने पर वह चुपचाप घर में आकर खाने-पीने के बाद चारपाई पर चित्त पड जाते। वह घंटों खर्राटे भरते रहते और सारा घर आसानी से समझ जाता कि वह खुख होकर आये हैं।"[1] उसकी इस आदत ने घर में आर्थिक तंगी उत्पन्न कर दी। परिवार में अशांति फैल गयी। बच्चे बिगड़ गये। जिस पिता से उन्हें मार्गदर्शन मिलना चाहिए, वह मिला ही नहीं। वे दिशाहीन रह गए। इस प्रकार अर्थ की उपयोगिता के एक नकारात्मक पक्ष को अमरकांत ने यहाँ उजागर किया है।

अर्थ के कारण संबन्धों में दरार आती है। आज के अर्थकेन्द्रित समाज में खून के रिश्ते के लिए कोई स्थान नहीं है। सब लोग अर्थ के पीछे भागते रहते हैं। अर्थ की अप्रत्याशित उपलब्धि मनुष्य को संबन्धों से, अपने रिश्तों से दूर भगाते हैं। जिसके पास धन है उसको बडा और जो गरीब है उसको हीन समझने की प्रवृत्ति

---

1. अमरकांत, घर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 520

ने आज जन्म लिया है। अर्थ के सामने सब अंधे हो जाते हैं। फिर रिश्ता चाहे जो भी हो बेकार की चीज़ बन जाता है। 'उसका आना और जाना' कहानी का रवि जब पढ़-लिखकर अच्छी नौकरी पाकर धनी बन जाता है तो उसका तेवर बदल जाता है। अपने पिता को पिता मानने के लिए भी वह तैयार नहीं होता है। अपनी बेटी की शादी में आए मेहमानों से अपने पिता का परिचय वह इसलिए नहीं कराना चाहता कि वह गाँववाला है, गरीब है। "उनको विश्वास था कि लडका अपने आगन्तुक मित्रों और परिचितों से उनका परिचय कराएगा ही और इसलिए वह नज़दीक से नज़दीक रहना चाहते थे। लेकिन रवि को उनकी ओर देखने की भी फुर्सत न थी।"[1] इस प्रकार वह अपने पिता के साथ व्यवहार करता है। पिता कहने भर के लिए पिता बन कर रह गए। मतलब आजकल आर्थिक दूरी पिता-पुत्र के रिश्तों में दक्खल देने लगी है।

'बढ़ते पौधे' नामक कहानी में लेखक ने इसका अंकन किया है कि मध्यवर्गीय परिवार में पिता की कमाई यदि घट गयी तो उसकी हालत कैसी होती है। पिता की कमाई घट जाने के बाद परिवार की हालत को अमरकांत ने यों प्रस्तुत किया है - "दर असल पिछले कुछ वर्षों से हर चीज़ उसके काबू से निगलती गई थी। दो लडके और लडकी जवान हो गए थे। हर दो-तीन वर्ष कुटुंब जनों की संख्या बढती गई थी। खाना, कपडा, पढाई की फीस, बीमारी, हैरानी, दुनियादारी, रिश्तेदारी हर समस्या उसके अस्तित्व को झुठलाती गई थी। फिर देखते-देखते सब

---

1. अमरकांत, उनका आना और जाना, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 466

कुछ बदल गया था। हर काम अजीब ढंग से होने लगा था। कुटुंब का हर आदमी एक खास तरीके से आचरण करने लगा था, जैसे पुरानी ईंट की दीवार पर अकस्मात् पौधे उग आयें और बढने लगें।"[1] मतलब घर में बिना कमाई के पिता की दशा एक तमाशबीन जैसा रह गया।

'बीवी के खत' में रोज़ी-रोटी के लिए शहर की ओर जानेवाले मध्यवर्ग के आदमी की तस्वीर खीची गयी है। पहले वह अपनी पत्नी और बच्चे को अपने पिता के पास छोड जाता है क्योंकि शहर में उसकी जो कमाई मिलती है उससे अब दोनों का खर्च उठाना मुश्किल है। लेकिन जाने के बाद पत्नी और बच्चे के लिए वह पैसे नहीं भेजता। जब मुन्ना के इलाज के लिए पत्नी पैसा माँगती है, कहती है कि मुन्ने के पेट में केंचुए हुए थे। सुई लगाने के लिए तीस रुपये फौरन चाहिए तो जवाब में पति अपनी तबियत खराब थी का बहाना बनाता है। इस प्रकार पति और पत्नी के आपसी संबन्ध में तनाव उत्पन्न हो जाता है।

आज की अर्थकेन्द्रित दृष्टि और उससे उत्पन्न संकुचित मानसिकता ने मनुष्य को अंधा बना दिया है। आजकल मनुष्य का एकमात्र लक्ष्य धन कमाना और ऐशोआराम की ज़िंदगी जीना है। उसके लिए अपने माता-पिता की उपेक्षा करने के लिए भी वह तैयार है। अर्थकेन्द्रित समाज में रिश्तों की कोई अहमियत नहीं है। आजकल पारिवारिक संबन्धों में आनेवाले दरार, तलाक की समस्या, पारिवारिक जीवन के तनाव आदि के आधारभूत कारणों में से एक अर्थ संबन्धी समस्याएँ ही है।

---

1. अमरकांत, बढते पौधे, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 462

4.5 अर्थ के प्रति लालसा

धन (पैसा) ही वह चीज़ है जो इन्सान को दानव बनाता है और उसके अंदर की संवेदना के नष्ट करता है। पैसे की लालच से मनुष्य लोभ और स्वार्थ का गुलाम बनता जा रहा है और उसमें एक प्रकार की दानवीयता जन्म लेती है। आजकल की स्थिति ऐसी है कि जिसके पास धन है वह उसको बचाये रखना चाहता है और उसमें वृद्धि करना चाहता है। ज़रूरत के लिए भी खर्च करने के लिए तैयार न होनेवाले कंजूस लोगों से आज समाज भरा हुआ है।

'दलील' कहानी में विनय को किसी मीटिंग में पहुँचना है। उसने रिक्शा पकडने का निर्णय लिया, वह भी सस्ता। उसने रिक्शा पकडा। रिक्शेवाले ने बहुत ही विनम्रता के साथ उससे बातें की, इसलिए उसने सोचा कि सीधा-सादा आदमी है, कम पैसे में काम चलेगा। रिक्शेवाले की बातों से पता चला कि वह पहले एक भिखमंगा था और बाद में काम करके जिंदगी बिताने का निर्णय लिया और रिक्शा चलाना शुरू किया। यह सुनकर विनय ने सोचा कि चलो कोई बात नहीं भिखमंगा था न, पैसा तो ज़रूर कम ही दूँगा। रिक्शेवाले ने आगे कहा कि वह पहले गुंडा था और चोरी डकैती करता था तो विनय ज़रा सहमा गया। फिर भी विनय ने अपने मन में सोचा कि कोई बात नहीं और रिक्शेवाले को प्रोत्साहन देता रहा कि तुम्हें बाप-दादे का काम करना चाहिए था, मतलब भीख माँगना चाहिए जो बडा ही पवित्र काम है, भगवान जो देता है, उसे स्वीकार करना चाहिए।

जब रिक्शा गन्तव्य स्थान पर पहूँचा तो विनय ने जेब से तीन रुपये निकालकर रिक्शेवाले की ओर बढा दिया। रिक्शेवाले ने जब पाँच रुपये माँगे तो विनय अचानक गुस्से में चिल्लाकर बोला - "मैं रेट-वेट कुछ नहीं जानता। हो तो चोर-भिखमंगे ही न। मौका देखकर अपनीवाली करने लगे।"[1] यहाँ विनय की स्वार्थी मानसिकता को अभिव्यक्ति मिली है जो अपनी जेब से एक कौडी भी दूसरों को देना नहीं चाहता इतना ही नहीं गरीबों की रोटी को छीन भी लेना चाहता है। कहानी में अमरकांत कहते हैं - "इंसानियत बते चीज़ है। पैसा तो इंसान को गिरा देता है।"[2] यह आजकल की सच्चाई है। पैसे के लिए लोग कुछ भी करने को तैयार हो जाता है।

आजकल आदमियों के प्यार-व्यवहार में भी कपटता छिपी रहती है। अर्थ ने आदमी को ऐसा बना दिया है कि उसने प्यार भी कोई आर्थिक लाभ के आधार पर करना शुरू कर दिया है। अन्यथा सेक्स की भूख खत्म होते ही अधिकांश युवक अपनी प्रेमिका से नाता तोड देते हैं। मोहन की शादी में उसका मधु से परिचय हुआ था। गँवई-गाँव की औरतों में वह अलग ही नजर आती थी। बातचीत के दौरान ही उसे पता चला कि वह एक विधवा की लडकी है। वास्तव में मोहन को जो पत्नी मिली थी वह अनपढ़ थी। उसे देखते ही घूँघट निकाल लेती थी। सिनेमा दिखाने ले जाओ तो सो जाती थी। विवाह के कुछ दिनों बाद ही पति-पत्नी के बीच दरार पैदा हो गयी।

---

1. अमरकांत, दलील, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 43
2. वही, पृ. 41

लखनऊ लौट आने के बाद उसकी मुलाकात मधु और उसकी माँ से हुई। मधु और मोहन दोनों आपस में प्यार करने लगे। इस तरह पूरे आठ वर्ष चलता रहा। अचानक उसे पिता का तार मिलता है। घर लौटकर उसने देखा कि उसके ससुर आये हैं। उसकी पत्नी ने बि.ए कर लिया है। उसमें काफी परिवर्तन आ गया था। उसके मुँह पर पाउडर और होठों पर लिप्स्टिक थी। उसके ससुर ने उससे कहा कि उनकी विशाल संपत्ति का मालिक अब मोहन है। यह सुनते ही मोहन लालच में आ जाता है। वह लौटकर मधु को प्यार से समझाता है कि वह अपनी जाति के लडके से विवाह कर गृहस्थी बसा ले। बडी उदारता से वह मधु को उपदेश देता है - "मैं त्याग की भावना से ही ऐसा कर रहा हूँ। मैं तुम्हें सुखी देखना चाहता हूँ और उसके लिए बडी से बडी कुर्बानी कर सकता हूँ।"[1] इस प्रकार पैसे के लालच में आकर मोहन मधु को छोडता है और पत्नी के पास चला जाता है। मतलब पैसा आदमी को दानव बनानेवाली चीज़ है।

'सपूत' कहानी में अमरकांत ने एक परदेशी के प्रसंग को उठाया है। परदेशी की विधवा सॉस के पास असीम संपत्ति थी, जिन पर लोगों की नज़र भी थी। एक दिन उसकी हत्या हो गयी। परदेशी गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन बाद में अखबार में जो रिपोर्ट छपी थी, वह परदेशी और शीला जो उसकी साली है, के पक्ष में थी। इस प्रकार अमरकांत ने आजकल की एक सच्चाई की और इशारा किया है कि आजकल आदमी संपत्ति के लिए खून करने के लिए भी तैयार हो जाता है और इसको छुपाने के लिए उसी संपत्ति का ही इस्तेमाल करता है।

---

1. अमरकांत, मुक्ति, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 315

आज पैसे से आदमी भी खरीदा जा सकता है। 'लडकी की शादी' में अमरकांत ने एक ऐसे पात्र को चुना है जो अपनी कुरूप लड़की की शादी एक युवक से मुफ्त में करवा देता है और अहसान भी लाद देता है। लडकी का शरीर थुल थुल था, नाक चपटी थी। चेचक में उसकी एक आँख चली गयी थी। वह घमंडी, हठी, क्रोधी और आलसी होने से इन्टर के आगे पढ़ नहीं पायी। लाड-प्यार के कारण वह शऊर-अऊर भी सीख न सकी। ऐसी लड़की के लिए उसका पिता एक मंत्री के लडके से लेकर कलेक्टर तक के यहाँ प्रयास करता है।

एक दिन उसे एक नौजवान याद आता है। परंतु उसका नाम और पता तो नहीं जानता था। बाद में उस नौजवान से ही पता चलता है कि उसने ही नगर विश्वविद्यालय में उसे नौकरी दिलवायी थी। बातों ही बातों में उसे पता चला कि वह गंगापुर बरती का रहनेवाला है और चतुर्वेदी है। शादी भी उसकी नहीं हुई थी। लडके की आर्थिक स्थिति बडी कमज़ोर थी। यही तो लडकी का पिता चाहता था। वह अपनी लडकी की झूठी तारीफ करता है और कृष्णमोहन के पास शादी का प्रस्ताव रखता है। यह भी कह देता है कि यदि उसे 800रु का वेतन मिले तो शादी के लिए तैयार है या नहीं। कृष्णमोहन ने दो-तीन दिन की मोहलत मांगी। तीन दिन तक उसका कोई पता ही नहीं था। लेकिन बाद में एक चिट्ठी आयी। उसमें लिखा था कि "सबसे बडा है इन्सान का कर्तव्य। आपने मेरे और मेरे कुटुंब के साथ जो एहसान किया है, उसको भूल नहीं सकता। उस उपकार का बदला नहीं चुकाया जा सकता। मुझे धन से मोह नहीं। उससे अधिक मैं सिद्धांत और कर्तव्य और आदर्श को प्यार करता हूँ। आपका प्रस्ताव तो मामूली बात थी। यदि आपने जान देने को

भी कहा होता, तो मैं उसके लिए तैयार हो जाता।"[1] मतलब पैसे से आदमी को भी खरीदा जा सकता है। आज अर्थ की धुरी पर दुनिया चलती है। सभी क्षेत्रों में शासन अर्थ का चल रहा है।

आज के अर्थ केन्द्रित समाज में आदर्श और सिद्धान्तों का कोई स्थान नहीं है। आदर्श और सिद्धान्त केवल प्रदर्शन की वस्तू बन गई है। आजकल धन की लालसा में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच मानवीयता कम होती दिखाई देती है। छल-कपट, मार-पीट ने मानवीयता की जगह अपना रोब जमाया है। एक ओर आदमी इतना कंजूस बनता जा रहा है कि उसने गरीबों के पेट पर लात मारना शुरू कर दिया है तो दूसरी ओर पैसे की घमंड ने आदमी को इतना गिरा दिया है कि वह दूसरों की गरीबी का फायदा उठाकर, आदमी को ही मोल लेने का कार्य करता है। हत्या, लूट-मार आदि उसके लिए बाएँ हाथ का खेल बन गए हैं। आदमी ने अपनी इन्सानियत को खो दिया है और उसमें एक प्रकार की दानवीयता जन्म ली है।

4.6 आर्थिक परिवेश और नारी

पहले से लेकर स्त्री के लिए रोज़गार की कोई कमी नहीं थी। लेकिन महिलाओं की कमाई को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता था। मृदुला सिन्हा के शब्दों में "आर्थिक दृष्टि से पिछडे और मध्यम वर्ग में महिलाएं मवेशियों की देखभाल हो या खेती-बाडी के कार्य, भोजन बनाने, बच्चे पालने से लेकर अनाज

---

1. अमरकांत, लडकी की शादी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 176

की देख-रेख, किसी-न-किसी प्रकार से घरेलू अर्थव्यवस्था के कार्य में लगी ही रही हैं।"[1] मतलब पहले तो स्त्री कमाती थी लेकिन कमाई का फल भुगतनेवाला पुरुष होता था। स्त्री भी अपनी कमाई को परिवार और पति के हाथों देने पर सुख और संतोष का अनुभव करती थी। मतलब वह तो गुलाम थी जिसको वह नहीं समझती थी क्योंकि वह अशिक्षित थी। कमाने के बावजूद भी वह आर्थिक रूप से पराधीन थी। फलस्वरूप उसे ढेर सारी समस्याओं का सामना करना पडा।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में आर्थिक परिस्थितियाँ इतनी विकट हो गयी कि इसका तीव्र प्रभाव नारी पर भी पडा। इस युग तक आते-आते नारी में जागरण आया। उसमें उच्च शिक्षा प्राप्त करने की और स्वावलंबी बनने की आशा जगी। वह समझने लगी कि उसकी समस्याओं का एक कारण उसका आर्थिक रूप से पराधीन होना है। इस सोच ने नारी जीवन में बहुत बडा परिवर्तन लाया। डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के शब्दों में - "अभी तक व्यक्तित्व की विराटता एवं विशिष्टता का जो सर्वाधिकार पुरुषों के पास था वह सही अर्थों में नारियों तक भी पहूँचा और पहली बार इनके स्वतंत्र-चेता मानस एवं स्वाधीन व्यक्तित्व को नई प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर हुई। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पुनर्जागरण के इस काल में नारियाँ कहीं भी कोने में पडी रहनेवाली मैले कपडों की गठरी नहीं सिद्ध हुई और प्रत्येक क्षेत्र में उनका स्पष्ट योगदान सामने आया।"[2] स्त्री समझने लगी कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने पर समाज में उसका अस्तित्व और अधिक

---

1. मृदुला सिन्हा, मात्र देह नहीं है औरत, पृ. 139
2. डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 62

मज़बूत होगा। समकालीन साहित्य में नारी के इन दोनों रूपों की स्पष्ट अभिव्यक्ति हुई है।

अमरकांत ने अपनी कहानियों के माध्यम से इस विचार पर ज़ोर देने की कोशिश की है कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने से ही नारी को समाज में समानता प्राप्त होती है। नौकरी पेशा नारी ज़िंदगी की समस्याओं का सामना करने में आर्थिक रूप से पराधीन नारी से भी काफी सफल है। अगर नारी को अपने परिवार में, अपनी ज़िंदगी में अकेली लडने की नौबत आती है तो उसकी आर्थिक स्वतंत्रता उसके लिए सहायक सिद्ध होगी और समाज में ऐसी नारियों को अधिक सम्मान भी प्राप्त होता है।

4.6.1 आर्थिक रूप से पराधीन नारी

अशिक्षित और आर्थिक दृष्टि से पराधीन नारी को जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना करना पडता है। इसके लिए सबसे सशक्त प्रमाण है 'लाखो' कहानी की 'लाखो'। अपने पति की मृत्यु के उपरांत देवर उसको गंगा के किनारे छोडकर चला जाता है। परिवार द्वारा उपेक्षित उस स्त्री की सहायता करने का निर्णय कथावाचक ने लिया। गाँव के चुन्नीलाल नामक व्यक्ति से उसकी शादी कराया। चुन्नीलाल के साथ लाखो बहुत खुश थी। चुन्नीलाल और लाखो का कोई बच्चा नहीं हुआ। चुन्नीलाल की ज़िंदगी के अंतिम समय में उसका भतीजा उसके साथ बहुत प्यार जताने लगा क्योंकि चुन्नीलाल के पास जमीन जायदात तो ज़्यादा था। उसके दिखावटीपन को समझकर कथावाचक के कहने पर चुन्नीलाल जमीन

लाखों के नाम करता है। चुन्नीलाल की मृत्यु के बाद भतीजा और उसकी पत्नी लाखों की बहुत देखभाल करती है। सचमुच लाखों की उसने इतनी सेवा की कि वह उसकी पूरी तरह अभ्यस्त हो गयी और ईमानदारी से यह विश्वास करने लगी कि नौसा (भतीजा) और उसकी बीवी ज़िंदगी भर उसकी इसी तरह सेवा करते रहेंगे। उसने अपनी ज़मीन नौसा के नाम कर दिया। ज़मीन मिलने के बाद नौसा का रंग बदल गया। प्रस्तुत प्रसंग को कहानी में यों प्रस्तुत किया है - "ज़मीन लिखा लेने के बाद नौसा और उसकी पत्नी का असली चेहरा प्रकट हुआ। उन्होंने अपना रूप और व्यवहार आसानी से इस तरह बदल लिया कि किसी को भी आश्चर्य हो सकता है। अब वे लाखों के साथ नियमित रूप से गाली-गलौज करने लगे। उसके खाने में कटौती होने लगी। उससे तरह-तरह के काम लिए जाने लगे। जब वह अपनी ज़मीन और हक की बात करती तो सब मिलकर उसे मारते-पीटते।"[1] अंत में अपनी ज़मीन में जाकर उसकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार जब अपने पास संपत्ति थी तब लाखो आराम की जिंदगी जी सकती थी और उसका सम्मान होता था। जब वह सब कुछ नष्ट होकर पूरी तरह अबला बन गयी तो अपने ही लोगों ने उस पर वार किया।

'विजेता' कहानी की नीलम पतिपरायण नारी है। लेकिन उसके पति रामायण को वह पसंद नहीं क्योंकि वह अनपढ़ है। नीलम को वह प्यार और लिहाज नहीं मिले जो एक पति से पत्नी को मिलना चाहिए था। इतना ही नहीं दूसरे

---

1. अमरकांत, लाखो, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 172

लडकियों के पीछे घूमना और मीठी-मीठी आदतें बनाना ही रामायण आदत बन गयी थी। नीलम अपने पति से कुछ न कह सकी क्यंकि वह अशिक्षित है और उसकी कोई नौकरी पेशा भी नहीं। पति से अलग होकर उसका अस्तित्व ही नहीं था।

'पलाश के फूल' कहानी में रायसाहब पंद्रह साल की अंजोरिया जो उसके ज़मीन पर काम के लिए आयी थी, उसका दैहिक शोषण करता है। अंजोरिया अपने घर की आर्थिक स्थिति कमज़ोर होने पर रायसाहब के ज़मीन पर काम करने आयी थी। लेकिन जब अंजोरिया उससे प्यार करने लगी और उसके साथ ज़िंदगी बिताने की आशा प्रकट की तो रायसाहब का हुलिया बदल गया। रायसाहब अंजोरिया के बारे में कहता है - "उसने पहले अपने रूप के जादूसे मुझे वश में किया, फिर अपना प्यार जताकर मुझे उल्लू बनाती रही, मेरा रुपया-पैसा बरबाद करती रही। माया का असली रूप यही देख सकते हो। तो मैं ज्यों-ज्यों सोचता गया, मुझमें उस औरत के लिए नफरत-सी भरती गयी।"[1] रायसाहब वहाँ से अपना गाँव चला आया बाद में लौटकर गया भी नहीं।

निर्धन परिवार की लडकियों के लिए कभी-कभी अपनी आकांक्षाओं और सपनों की बली चढाना पडता है। 'हौसला' कहानी की उमा ऐसा ही एक पात्र है जिन्हें अपने परिवार के लिए अपने सपनों को अपने ही अंदर समेटना पडा। वह एक निहायत गरीब बाप की लडकी थी इसलिए स्कूल में वह दर्जा छह से अधिक पढ़ नहीं सकी जिसका उसे बहुत अफसोस था। जब वह बच्ची से बडी हुई तो

---

1. अमरकांत, पलाश के फूल, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 119

अपने दुल्हा का सपना देखने लगी, जो नौजवान और खूबसूरत हो किसी फिल्मी नायक की तरह, सभी शौक पूरे करे। मगर मिली उसको तितलौकी अठारह की होते ही उसके बाप ने ऐसे व्यक्ति से उसकी शादी तय कर दी, जिसकी उम्र कम न थी। नाटा, दुबला-पतला, काला, चेहरे पर चेचक के दाग, गाल पिचले हुए, बीच-बीच में नाक सिकोडनेवाला। वर को देखकर उमा बेहोश होकर गिर पडा। उसने शादी के लिए न कर दी। अंत में वह सज्जन बुलाए गये जिनकी जी तोड कोशिश से यह शादी तय हुई थी। उन्होंने प्यार से समझाया - "बेटी, माँ-बाप अपनी बेटी का अहित कर ही नहीं सकते। ठीक है कि तुम्हारे माँ-बाप के पास अधिक पैसा नहीं है, पर मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि कोई भी गरीब बाप अपनी बेटी के लिए इससे अच्छा वर ढूँढ ही नहीं सकता। आदर्श-विवाह, न कोई दान, न कोई दहेज लडका भी अव्वल, शहर में सरकारी नौकरी है, अपना मकान है। अंग्रेज़ी बहुत अच्छा बोलते हैं। शादी तो भगवान स्वर्ग से ही तय कर देते हैं - तुम्हारी किस्मत में यही बमभोले शंकर थे। हाँ खयाल करो, और भी बहनें है तुम्हारी....।"[1] उमा की दो बहनें थी। उसने उनके बारे में सोचा। अंत में मजबूर होकर शादी के लिए हाँ कह दी।

इस प्रकार समाज में उमा के समान कई युवतियाँ मौजूद है जिन्हें मजबूरन अपने सपनों की बली चबना पड रहा है। मौजूदा समाज की अर्थ केन्द्रित दृष्टि ने ऐसे अनेक निर्धन परिवारों का खून चूस लिया है जहाँ एक से अधिक बेटियाँ हो।

---

1. अमरकांत, हौसला, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 175

दहेज की प्रथा ने आज समाज में अपना रोब इस तरह जमाया है कि निर्धन परिवारों की लडकियों को दहेज देने से बचने के लिए कहीं अपनी उम्र से अधिक उम्रवाले एक शब्द में कहें तो अधेड उम्र के व्यक्ति से शादी करना पडता है। उसके लिए वह अभिशप्त बन जाती है। अगर नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्र है तो वह इन समस्याओं का सामना खुद कर सकती है। अर्थ केन्द्रित मौजूदा समाज में नारी के लिए आर्थिक स्वतंत्रता की सख्त ज़रूरत है।

4.6.2 वेश्या होने के लिए अभिशप्त नारी

कोई स्त्री अगर अपनी ज़िंदगी में वेश्या बनने के लिए अभिशप्त है तो पीछे आर्थिक पराधीनता की एक कहानी अवश्य छिपी होगी। वेश्या होने का मतलब ही यही है कि अपना जिस्म बेचकर अर्थोपार्जन करना। मृदुला सिंहा के शब्दों में "कोई स्त्री इस क्षेत्र में पदार्पण स्वेच्छा से नहीं करती। एक-एक का इतिहास देखा जाए तो वे परिस्थिति की मारी होती है।"[1] इस प्रकार वेश्या बनने के लिए अभिशप्त नारी के ऊपर समाज की दृष्टि भी बहुत हीन है। जब से किसी स्त्री वेश्या बन जाती है तब से समाज से वह अपने को कटा हुआ महसूस करता है। समाज से कटा हुआ उसका अपना ही एक समाज बनता है।

अमरकांत की कहानियों का यह एक कमज़ोर पक्ष महसूस होता है कि उन्होंने वेश्या जीवन के कटुयथार्थों की ओर गहराई से देखा नहीं है। फिर भी

---

1. मृदुला सिन्हा, मात्र देह नहीं है औरत, पृ. 122

उनकी कुछ कहानियों में वेश्या जीवन की समस्याओं को ऊपरी तौर पर ही सही स्थान मिला है।

अमरकांत की कहानी 'फुलरानी' वेश्याजीवन की कुछ पहलुओं को उद्‌घाटित करती है। फुलरानी जो है अब साठ पार कर चुकी है लेकिन अपने यौवन की अवस्था में वह बहुत ही सुंदर और सुडैल थी। अमरकांत ने यों कहा है - "आज वह भूतपूर्व है लेकिन कभी अभूतपूर्व भी थी।"[1] अब फुलरानी असफल अधेडावस्था को पार करके बेकार और उपेक्षित वृद्धावस्था में पहूँच चुकी थी। अमरकांत कहते हैं - "इस कथा के अनेक आयाम हैं, पर सार-संक्षेप यह कि फुलरानी अपनी दोनों बेटियों को शिक्षा नहीं दिला सकी, और न कोई अन्य स्वावलम्बी काम। दिन-पर-दिन गिरती आर्थिक अवस्था में रास्ता सिर्फ वही बचा था जो पहले से चला आ रहा था।"[2] मतलब फुलरानी बढ़ती आर्थिक अभाव के कारण अपनी बेटियों को भी अपने धंधे में धकेलने के लिए मजबूर थी।

'हत्यारे' कहानी में भी एक वेश्या का जिक्र अमरकांत ने किया है। दो नौजवानों के मन में जब कामवासना जाग उठती है तो वे लोग इस स्त्री के पास पहूँचते हैं और अपनी इच्छापूर्ती के बाद पैसा न देकर भाग जाते हैं।

इस प्रकार अमरकांत ने आर्थिक विषमता के बावजूद इस तरह के धंधे अपनानेवाले स्त्रियों की ज़िंदगी को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत करने का

---

1. अमरकांत, फुलरानी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 290
2. वही, पृ. 292

प्रयास किया है और उसके ज़िंदगी के पीछे छिपी आर्थिक विवशता का जिक्र करते हुए यह भी सिद्ध करने की कोशिश की है कि आर्थिक विषमता के चंगुल में फंसकर उन लोगों की आगामी परंपरा भी इस धंधे के फंदे में फंस जाती है।

4.6.3 आर्थिक रूप से स्वतंत्र नारी

अमरकांत ने आर्थिक रूप से पराधीन नारी की समस्याओं की ओर इशारा करते हुए आर्थिक रूप से उनकी स्वतंत्रता पर ज़ोर दिया है और इसके लिए भी उन्होंने अपनी कहानियों में कई नमूने प्रस्तुत किए हैं।

'तूफान' कहानी की सुमन उच्चशिक्षा प्राप्त युवती है। उसने एम.ए. पास की है। वह एक मध्यवर्गीय परिवार की है। उसका पिता इंग्लीश टीचर था। वह अपनी बेटी की शादी बडे अफसर के साथ करना चाहता था। लेकिन बडे-बडे अफसरों से शादी कराने के लिए दहेज देना पडता है। पिता के पास उतना तो पैसा नहीं था। फिर भी अपने सपने को साकार बनाने के लिए वह अपनी बेटी के लिए वर ढूँढना शुरू किया। उसने सुना कि वकील साहब के लडके के लिए लडकी ढूँढ रही है और लड़की को चुनने के लिए एक इंटरव्यू रखा गया है। पिता के कहने पर सुमन इंटरव्यू के लिए गयी। लेकिन बाद में उसे पता चला कि वह फेल हो गयी है क्योंकि उसके बाप के पास कार और मकान नहीं है। लौट आकर सुमन अपने बाबा से कहती है कि वह गलत रास्ते पर चल रहा है। पिता उससे पूछता है कि तुम लडकी हो, तुम क्या कर सकती हो तो सुमन बताती है - "मैं जवान हूँ, अपनी लडाई मैं खुद लड सकती हूँ, उस लडाई में खुशी-खुशी अपना बलिदान दे सकती

हूँ। दूसरे के लिए आप गलत लडाई और गलत ढंग से जो लडाई लड रहे हैं उसे मैं आपको रोक सकती हूँ, मुक्त कर सकती हूँ...।"[1] इस प्रकार अपना प्रतिरोध जाहिर करते हुए सुमन अपनी ज़िन्दगी खुद चुन लेती है। वह अपना वर खुद चुनती है। अगर सुमन यदि अशिक्षित लडकी हुई हो तो वह ऐसा कर ही नहीं सकती। वह शिक्षित है और आर्थिक रूप से वह स्वतंत्र है इसलिए वह अपना प्रतिरोध जाहिर कर सकी और अपनी ज़िंदगी जी सकी।

'हौसला' कहानी की उमा, जो परिवार की आर्थिक विषमता के कारण अपनी इच्छा के विरुद्ध एक अधेड उम्र के आदमी से शादी करने के लिए मज़बूर बनी औरत थी। उसका पति हरनाथ आर्डिनेंस डिपो में काम करता था, जहाँ से पता नहीं कब से पीतल की चोरी करके बाज़ार बेच रहा था। एक दिन वह पकडा गया। जाँच पडताल के बाद उसकी नौकरी से छुट्टी हो गयी। उमा की दो बेटियाँ थीं। वह हार मानने के लिए तैयार नहीं थी। उसके पास कुछ पैसे थे। उससे उसने घर के सामने एक दूकान खोल दी। उमा की मेहनत पर सबको हैरत होती। दूकान उसकी चल निकली क्योंकि सामान उसका साफ-सुथरा था ताज़ा और स्वादिष्ट। वह अपनी लडकियों से अक्सर कहती - "तुम लोग पढो, जितना पढोगी, पढाऊँगी। लडकों की तरह नौकरी कराऊँगी। सफाई से चलो। तुम्हारा दूल्हा मैं खोजूँ, तुम खोजो, एक ही बात है। ध्यान रहे, लडका कमासुत हो, भला इंसान हो, दिल में दया-दर्द हो, शौक-हौसला पूरा करे।"[2] उमा की ज़िंदगी में पहले तो एक उतार की

---

1. अमरकांत, तूफान, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 81
2. अमरकांत, हौसला, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 177

स्थिति आयी थी लेकिन बाद में अपने मनोबल और परिश्रम से वह आगे चली और शेष जीवन पर्यंत एक कामियाब ज़िंदगी जीती रही। उसने अपनी बेटियों की शादी भी करवाई, वह भी उन दोनों के पसदीदार लडकों से। इस प्रकार देखें तो स्वावलंबी नारी अपने पैरों में खडे होकर बहुत कुछ कर सकती है शायद पुरष से भी ज़्यादा।

4.7 रिश्वतखोरी

स्वतंत्रता के बाद स्वार्थ लिप्सा में लिपटी भारत की भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था ने देश के प्रत्येक क्षेत्र को झकझोरा। बिगडती अर्थव्यवस्था ने भारत के आवाँ की ज़िंदगी को बुरी तरह प्रभावित किया। नेरन्द्र मोहन के शब्दों में - "भीडतंत्र की ओर बढते भारतीय लोकतंत्र को 'धन' और 'पद' की दौड़ ने और भी विकृत बना दिया है। आवश्यकता 'धन' और 'पद' से बचने की नहीं थी और न है, पर दुर्भाग्य यह है कि नेता से लेकर हर औसत नागरिक कहीं न कहीं धन और पद की दौड में लगा हुआ है और फिर भी वह संकीर्ण व स्वार्थ प्रेरित अपनी आकांक्षाओं को कोरे सिद्धान्तों का जामा पहना देना चाहता है।"[1] 'धन' और पद की ओर की यह अंधाधुंध दौड ने मनुष्य की मानसिकता को संकुचित बनाया है। अर्थ के लोभ में सब कहीं भ्रष्टाचार व्याप्त है। रिश्वत की समस्या आम जनता की ज़िंदगी को चूस रही है। अमरकांत ने जनता की इस तडप को नज़दीकी से देखा है और अपनी कहानियों में अभिव्यक्ति भी दी है।

---

1. नरेन्द्र मोहन, आज की राजनीति और भ्रष्टाचार, पृ. 18

रिश्वतखोरी की समस्या ने आज सभी क्षेत्रों में अपना रोब जमाया है। जहाँ जहाँ से आर्थिक लाभ की संभावना है, वहाँ राजनीति और राजनीतिज्ञों का हस्तक्षेप हो चुका है और रिश्वतखोरी जैसे भ्रष्टाचार को पनपने का ज़मीन पहले ही तैयार पडा है। आज के अर्थ केन्द्रित समाज में यह समस्या दीवार पर उगते पौधे के समान है। समय बीतते-बीतते इसको उखाड फेकना नामुम्किन है।

'दर्पण' कहानी में अपने बेटे के लिए नौकरी की सिफारिश लेकर आनेवाली वृद्ध माँ का कथन यह सिद्ध करने के लिए सक्षम है कि अर्थकेन्द्रित दुनिया में रिश्वतखोरी जैसी समस्या की जकड़ में आम जनता का दम घुट रहा है। वृद्ध माँ कहती है - "दुहाई हो सरकार की,..... इसका बाप चार साल पहले मर गया, मैंने किसी तरह बर्तन मॉजकर इसे पढ़ाया, एक बाबू से कहा था, उन्होंने कहा रेलवई में लगवा दूँगा, दस हज़ार का खर्चा पडेगा। माई बाप, एक दो हज़ार की बात होती तो सामान बेचकर, कर्जा लेकर करती, अब दस हज़ार कहाँ से लाऊँ?" भारती जी उससे अर्जी लिखकर देने को कहता है और बाद में जब अपना एक आदमी नौकरी की सिफारिश के लिए आता है तो उससे इस प्रकार व्यवहार करता है जैसा कि उसके लिए नौकरी पक्की हो। यह है आज की दुनिया। यहाँ जिसके हाथ पैसा है वही राजा है, सारी सुविधाएँ केवल उसको ही प्राप्त है। गरीब तो हमेशा गरीब बनकर जीने के लिए अभिशप्त है।

'शाम के अंदेरे में भटकता नौजवान' नामक कहानी का नौजवान आई.टी का विद्यार्थी है। वह कथावाचक के पास आता है और कोचिंग क्लास शुरू करने

---

1. अमरकांत, दर्पण, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 56

के लिए सलाह माँगता है। वह कहता है कि इस कार्य में अगर जम जाऊँ तो कुछ ही वर्षों में पचासों लाख कमा लूँगा। लेकिन कथावाचक उसको यह सलाह देता है कि अच्छी तरह से नियम और कानून का अनुसरण करके सही ढंग से पढना चाहिए। बाकी सब तो इसके पीछे आ ही जाएँगे। लेकिन जब पढाई की फीस के बारे में पूछा तो नौजवान कहता है - "सर, एक वर्ष में करीब पैंतीस हज़ार रुपये फीस देनी होती है, एक मामूली किसान का लडका कहाँ से देगा?"[1] यह आजकल की एक सच्चाई है। आजकल पढाई के क्षेत्र में भी यह समस्या है। डोनेशन के नाम पर पहले ही पैसा माँगता है और बाद में फीस के नाम पर वास्तव में इसको भी घूस कहना चाहिए।

'एक निर्णायक पत्र' नामक कहानी का कुमार विनय भी इसी घूसखोरी की समस्या का शिकार है। वह उच्चशिक्षा प्राप्त व्यक्ति है। नौकरी के लिए वह लगातार परिश्रम करता रहा। पहले तो उसको समझ में नहीं आया कि वह क्यों असफल हो रहा है। लेकिन बाद में बात समझ में आयी। प्रस्तुत प्रसंग को कहानी में यों किया है - "नौकरी की परीक्षाओं में असफल होने का कारण उस समय समझ में आया था उसे, जब एक में कुछ माँग गया, किन्तु उतनी धनराशि उसके पास थी नहीं।"[2] दरअसल एक औसत मध्यवर्गीय व्यक्ति के लिए आज दो जून के भोजन का इंतज़ाम करना तो मुश्किल का काम बन गया है फिर वह नौकरी कैसे खरीद

---

1. अमरकांत, शाम के घिरते अंधेरे में भटकता नौजवान, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 321
2. अमरकांत, एक निर्णायक पत्र, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 300

सकता है। आज की स्थिति ऐसी है कि युवापीढ़ी को पढ़-लिखकर नौकरी प्राप्त करने के बजाय घूस देकर नौकरी खरीदना पड रहा है। आज के अर्थ केन्द्रित समाज में मानव की सोच इतनी गिर गयी है कि हर कहीं एक भोगवादी दृष्टि व्याप्त है। भ्रष्टाचार रूपी वटवृक्ष ने अपनी जडें इस तरह मज़बूत कर दी है कि मध्यवर्गीय आदमी का दम घुटता जा रहा है फिर भी वह धन के पीछे की अंधाधुंध दौड़ में है।

4.8 आर्थिक रूप से शोषित हाशिएकृत समाज

आज़ादी के बाद देश के शासकों के सामने सबसे बडा सवाल देश के नव निर्माण का रहा। राजनीतिक स्वतंत्रता को भारतीय जनता ने आर्थिक स्वतंत्रता के रूप में देखा है और आर्थिक स्वतंत्रता के लिए भारत की नई सरकार ने बहुत सारी योजनाओं की व्यवस्था भी की है। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू जिस समाजवादी व्यवस्था के कायल थे उसके लिए औद्योगीकरण अनिवार्य शर्त था। यही नहीं सद्यः प्राप्त स्वतंत्रता की रक्षा के लिए भी राष्ट्र का औद्योगीकरण आवश्यक था क्योंकि बडे कल-कारखानों के अभाव में अस्त्र-शस्त्रों के लिए भारत को अन्य देशों पर निर्भर रहना पडता था। लेकिन नए उद्योग-धंधों को शुरू करने के लिए जिस विशाल संपत्ति की आवश्यकता थी, वह हमें प्राप्त न थी। इसके लिए पूँजीपतियों की सहायता की आवश्यकता पडी। स्वतंत्र भारत में औद्योगीकरण के फलस्वरूप जिन उद्योग धंधों का उदय हुआ उससे लाभ तो अवश्य हुआ है लेकिन इस विकास का कुछ ऐतिहासिक फल यह हुआ है कि हमारी अर्थव्यवस्था पर पूँजीवाद की गहरी छाप पडी और समाज शोषक और शोषित वर्गों में बँट गया है। इसके फलस्वरूप वर्ग संघर्ष की नयी भूमि तैयार हुई।

भारतीय मध्यवर्ग में उस समय उच्च जातियों का वर्चस्व था। शोषक और शोषितों में बँटे समाज में शोषकों ने सामंतवादी पूँजीवादी रवैया अपनाकर निम्न स्तर के लोगों का हमेशा शोषण करता रहा। इन शोषणों के पीछे का सबसे प्रमुख कारण आर्थिक दृष्टि से अंतर था जिसमें बराबरी लाना मुश्किल काम था। यहाँ धन कुछ लोगों के हाथों में केन्द्रित रहा मतलब अमीर अपनी तिजोरियाँ भरता रहा, गरीब और गरीब होता रहा। अमरकांत के शब्दों में "ऐसी व्यवस्था जो पूँजी और सत्ता को कुछ लोगों के हाथों में केन्द्रित करे, वास्तविक जनतंत्र को आगे नहीं बढा सकती।"[1] ऐसी व्यवस्था ने देश में कई आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न कर दीं। आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग हमेशा उच्च वर्ग के पाँवों के तलवे सहलाने के लिए मजबूर बने। अमरकांत ने अपनी कहानियों में ऐसे लोगों की अनुभूतियों को आवाज़ देने की कोशिश की है जो आर्थिक रूप से शोषण के शिकार बने हैं।

'दो चरित्र', 'जन्मकुंडली', 'ज़िंदगी और जोंक' आदि कहानियों में अमरकांत ने भिखमंगों की ज़िंदगी के मार्मिक पक्षों का खुलासा किया है। 'ज़िंदगी और जोंक' में भिखमंगा रजुआ बाद में पूरे मोहल्लेवालों का नौकर इसलिए बन जाता है कि वहाँ नौकरों की कमी है। वहाँ नौकर-चाकर किसी के यहाँ बहुत दिनों तक नहीं टिकते थे, वे भागकर रिक्शा चलाने लगते थे या फिर जाकर किसी दूसरे कारखाने में काम करने लगते। कहानी की प्रारंभिक घटना वह है कि शिवनाथ बाबू रजुआ पर साडी की चोरी का आरोप लगाता है और उसको बुरी तरह पीटता है। लेकिन

---

1. अमरकांत, कुछ यादें कुछ बातें, पृ. 146

साडी जब घर में ही मिल गयी तो शिवनाथ बाबू कहता है - "इस बार साडी घर में ही मिल गयी। पर कोई बात नहीं। चमार-सियार तो डाँट-डपट पाते ही रहते हैं। इस पर क्या पडी है, चोर-चाई तो रात-रात भर मार खाते हैं और कुछ भी नहीं बताते। ....चलिए साहब नीच और नीबू को दबाने से ही रस निकलता है।"[1] यहाँ शिवनाथ बाबू उस सामंतवादी, पूँजीवादी मानसिकता का प्रतीक है जिसका नज़रिया हमेशा शोषण का रहा है। मोहल्ले के अन्य लोगों के घर में पानी भरने का काम कहार करता था। लेकिन वह गगरों के हिसाब से पानी भरता था और यदि एक गगरा भी और भर देता तो उसके लिए ज़्यादा पैसा वसूल कर देता था। ऐसे अवसरों पर रजुआ से काम कराना वे लोग उचित समझते थे।

कहानी में रजुआ की मुलाकात एक पगली से होती है। पगली के चली जाने के बाद रजुआ बरन की बहू के यहाँ ठहरता था। और उसको बुआ कहके बुलाता था। उसकी पूरी कमाई बरन की बहू के हाथों में दे देता था। लेकिन एक दिन जब रजुआ बरन की बहू से अपने पैसे माँगे तो उसने इनकार कर दिया और कहा कि उसके पास एक पाई भी नहीं है। इस प्रकार पूरे मोहल्लेवाले रजुआ का आर्थिक रूप से शोषण करता है। आज की अर्थकेन्द्रित दृष्टि ने लोगों के बीच ऐसी मानसिकता को जन्म दिया है जिसमें आर्थिक स्थिति को देखकर उच्च-नीच का निर्णय होता है। आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित लोग हमेशा आर्थिक अभाव में जीनेवाले को अपना अधीन मानकर अपने पैरों के तले उनके गर्दन दबाते रहते हैं और उसमें खुशी का अनुभव करते हैं।

---

1. अमरकांत, ज़िंदगी और जोंक, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 71

'दो चरित्र' कहानी में जनार्दन के घर के दरवाज़े पर भीख माँगने के लिए जो लडका आता है उसके बारे में जनार्दन की मानसिकता कुछ इस प्रकार थी - "अरे मैं इनकी नस-नस पहचानता हूँ। काम के नाम पर ही तो इनकी नानी मरती है। ....यह पास के किसी गाँव-देहात का रहनेवाला है और इन सबों ने माँगना-मूँगना अपना पेशा बना लिया है। माँ कहीं माँगती है, बाप कहीं माँगता है, यह लडका कहीं।"[1] इस प्रकार कहते हुए वह उससे पूछता है कि काम करोगे तो वह काम करने के लिए तैयार हो जाता है। वह इस शर्त पर काम देता है कि ठीक से काम करना होगा नहीं तो पुलिस के हवाले कर देगा और दो रुपये महीना तनख्वाह भी देने का वादा करता है। जनार्दन उससे बुरी तरह काम करवाता है। जहाँ तक कि उसके मकान के सामने नाली थी, जिसका पानी बहता न था और वह बरसों से इकट्ठा होकर कला-बदबूदार हो गया था, उसको भी साफ कराया। अंत में लडके से कहा कि कमरा साफ करना है। लडका झाडू लाकर साफ करने लगा तो कुछ देर खडे रहने के बाद जनार्दन बिजली की फुर्ती से लडके के पास गये और उसे एक लात जमाते हुए मुँह विकृत कर फुसफुसाहट-भरी आवाज़ में बोले "भाग साले यहाँ से, चोट्टा कहीं का।"[2] जनार्दन ने दस पैसा लडने की ओर बढ़ाया। "लडके ने हाथ बढाकर अपनी हथेली पर पैसा रोक लिया और वहाँ से भाग चला। उसका चेहरा भय से सूख गया था और जल्दी में अपना डंडा भी लेना भूल गया।"[3] 'बहादुर' कहानी का लडका बहादुर के ऊपर जब घर में आए रिश्तेदार व्यर्थ ही

---

1. अमरकांत, दो चरित्र, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 112
2. वही, पृ. 115
3. वही

चोरी का इल्ज़ाम लगाता है तो वह डर जाता है। रिश्तेदार कथावाचक से कहता है - "यू डू नाट नो,दीज पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट।" कथावाचक की पत्नी निर्मला ने भी उसको डराया धमकाया। तंत्र आकर वह वहाँ से भाग जाता है। जाते वक्त कोई भी सामान नहीं ले गया। उसके कपडे, उसका बिस्तरा, उसके जूते सभी छोड गया है।

इस प्रकार देखें को मौजूदा समाज में इन हाशिएकृतों का शोषण बहुत ही पेचीदा समस्या है। अर्थाधीष्ठित समाज ने उच्च नीच भेदभाव को पनपने और जडें जमाने की उर्वर भूमि तैयार की। आज समाज में केवल दो ही वर्ग है - शोषक और शोषित।

4.9 निष्कर्ष

आज दुनिया अर्थ की धुरी पर चलती है। समाज के संपूर्ण क्षेत्र में अर्थ ने अपना रोब जमाया है अर्थात् आजकल सबका नियंत्रण 'अर्थ' कर रहा है। अर्थ केन्द्रित राजनीति ने जनता की समस्याओं को अधिक जटिल और पेचीदा बनाया है। आज सब लोग सुख-सुविधाओं के पीछे है। धन कमाने की होड़ में मानव ने अपनी इन्सानियत को खो दिया है। और उसमें दानवीयता जन्म ली है। सब कहीं भ्रष्टाचार फैल गया जिसके शिकंजे में फंसकर औसत आदमी होश संभालने के लिए तपडता रहता है। उसके सामने नई-नई समस्याएँ सिर उठाने लगी हैं। आर्थिक लोभ और स्वार्थ की दुनिया में आदमी के जीवन संघर्ष को अमरकांत ने नज़दीकी से देखा है और उसको अभिव्यक्ति देने में सफल भी हुए हैं।

❖❖❖